अपरा=जड़ प्रकृति है; **इयम्**=यह; **इतः**=इसके अतिरिक्त; **तु**=किन्तु; **अन्याम्**=दूसरी; **प्रकृतिम्**=शक्ति को; **विद्धि**=जानने का प्रयत्न कर; **मे**=मेरी; **पराम्**=चेतन; **जीवभूताम्**=जीव रूप; **महाबाहो**=हे बलिष्ठ भुजदण्डों वाले अर्जुन; **यया**=जिसके द्वारा; **इदम्**=यह; **धार्यते**=भोग के लिए ग्रहण किया जाता है; **जगत्**=प्राकृत-संसार।

अनुवाद

हे महाबाहु अर्जुन! इस अपरा (जड़ प्रकृति) के अतिरिक्त मेरी एक जीवरूप परा (चेतन) प्रकृति भी है, जो भौतिक शक्ति से संघर्ष करते हुए ब्रह्माण्ड को धारण करती है।।५।।

तात्पर्य

इस श्लोक में स्पष्ट कहा गया है कि जीव परमेश्वर श्रीकृष्ण की परा प्रकृति (उत्कृष्ट शक्ति) के अंश हैं। अपरा प्रकृति पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि एवं मिथ्या अहंकार के रूप में अभिव्यक्त जड़ तत्त्व हैं। भौतिक प्रकृति के भूमि आदि स्थूल और मन आदि सूक्ष्म. दोनों रूप अपरा शक्ति के कार्य हैं। विविध उद्देश्यों से इन अपरा शक्तियों का उपयोग कर रहे जीव परमेश्वर की परा शक्ति हैं। इसी जीव-शक्ति से सम्पूर्ण जगत् कार्यान्वित हो रहा है। जीव रूपी परा शक्ति से संचारित हुए बिना भौतिक सृष्टि कुछ भी क्रिया नहीं कर सकती है। शक्तियाँ नित्य शक्तिमान् के आधीन रहती हैं; इस न्याय से जीव पर सदा श्रीभगवान् का प्रभुत्व रहता है, उनका अस्तित्व स्वतंत्र नहीं है। इसके अतिरिक्ति जीव भगवान् के समान शक्तिमान् भी कभी नहीं हो सकते, जैसा बुद्धिहीन मनुष्यों का मत है। श्रीमद्भागवत (१०.८७.३०) में जीवों और श्रीभगवान् में भेद का निरूपण इस प्रकार हैः

अपरिमिता ध्रुवास्तनुभृतो यदि सर्वगतास्तर्हि
न शास्यतेति नियमो ध्रुव नेतरथा।
अजनि च यन्मयं तदविमुच्य नियन्तृ भवेत्
सममनुजानतां यदमतं मतदुष्टतया।।

हे परम शाश्वत् विभो! यदि बद्धजीव आपके समान ही नित्य एवं सर्वव्यापक होते तो उन पर आपका प्रभुत्व नहीं होता। परन्तु यदि यह मान लिया जाय कि वे आपकी शक्ति के लघु अंश हैं, तो वे आपके आधीन सिद्ध हो जाते हैं। इसलिए मुक्ति का सच्चा अर्थ जीवों का आपकी प्रभुता के शरणागत हो जाना है। ऐसी शरणागति उन्हें शाश्वत् आनन्द प्रदान करती है। वस्तुतः इस स्वरूप-स्थिति में ही वे स्वतन्त्रता को पाते हैं। अतएव जो अल्पज्ञ मनुष्य इस अद्वैतवाद का प्रचार करते हैं कि ईश्वर और जीव सब प्रकार से एक हैं, वे वास्तव में अपने को और दूसरों को भ्रमित ही करते हैं।'

परमेश्वर श्रीकृष्ण एकमात्र ईश्वर हैं और सब जीव उनके आधीन हैं। ये जीव श्रीभगवान् की परा-शक्ति हैं, क्योंकि दोनों में समान चिद्गुण हैं। परन्तु जीव शक्ति में भगवान् के तुल्य कभी नहीं हो सकते। जड़ प्रकृति के स्थूल और सूक्ष्म रूपों का